इस्लाम अन्य धर्मों से कैसे भिन्न है? (2 का भाग 1)

रेटिंग: **5.0**

विवरण: [illegible]

श्रेणी: लेख इस्लाम की मान्यताएं इस्लाम क्या है

द्वारा: Khurshid Ahmad

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 09 Nov 2021

सादगी, तर्कसंगतता और व्यावहारिकता

इस्लाम बिना किसी पौराणिक कथा का धर्म है। इसकी शिक्षाएँ सरल और बोधगम्य (स्पष्ट) हैं। यह अंधविश्वासों और तर्कहीन मान्यताओं से मुक्त है। एक ईश्वर मे विश्वास, मुहम्मद की भविष्यवाणी और मृत्यु के बाद जीवन की अवधारणा इसके विश्वास के मूल लेख हैं। ये सभी कारण पर आधारित हैं और तार्किक लगते हैं। इस्लाम की सभी शिक्षाएँ उन मूल मान्यताओं से निकलती हैं और सरल और सीधी हैं। पुजारियों का कोई पदानुक्रम नहीं है, कोई दूर की कौड़ी नहीं है, कोई जटिल संस्कार या अनुष्ठान नहीं हैं।

हर कोई खुद क़ुरआन पढ़ सकता है और उसके हुक्मों को अमल में ला सकता है। इस्लाम मनुष्य में तर्कशक्ति को जगाता है और उसे अपनी बुद्धि का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह उसे वास्तविकता के प्रकाश में चीजों को देखने के लिए प्रेरित करता है। क़ुरआन उसे ज्ञान प्राप्त करने और अपनी जागरूकता बढ़ाने के लिए ईश्वर का आह्वान करने की सलाह देता है:

कहो 'हे मेरे पालनहार! मुझे अधिक ज्ञान प्रदान कर। (क़ुरआन 20: 114)

ईश्वर कहता है:

"क्या वे लोग जो जानते है और वे लोग जो नहीं जानते दोनों समान होंगे? शिक्षा तो बुद्धि और समझवाले ही ग्रहण करते है।" (क़ुरआन 39: 9)

यह बताया गया है कि पैगंबर (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) ने कहा कि:

"वह जो ज्ञान की तलाश में अपना घर छोड़ देता है (चलता है) ईश्वर के मार्ग में।" (अत-तिर्मिज़ी)

और ये कि,

"ज्ञान प्राप्त करना हर मुसलमान के लिए अनिवार्य है।" (इब्न माजा और अल-बैहक़्की)

इस तरह इस्लाम इंसान को अंधविश्वास और अंधेरे की दुनिया से बाहर निकालता है और उसे ज्ञान और प्रकाश की दुनिया में ले जाता है।

फिर, इस्लाम एक व्यावहारिक धर्म है और यह खाली और व्यर्थ सिद्धांत में लिप्त होने की अनुमति नहीं देता है। यह कहता है कि आस्था केवल विश्वासों का पेशा नहीं है, बल्कि यह है कि यह जीवन का मुख्य स्रोत है। धर्मी आचरण को ईश्वर में विश्वास का पालन करना चाहिए। धर्म एक ऐसी चीज है जिसके बारे मे सिर्फ बाते नहीं करनी चाहिए बल्कि उसका पालन किया जाना चाहिए। क़ुरआन कहता है:

"जो लोग विश्वास करते हैं और सही ढंग से कार्य करते हैं, उनके लिए आनन्द और उत्तम ठिकाना है।" (क़ुरआन 13: 29)

पैगंबर ने भी यह कहा है:

"ईश्वर विश्वास को स्वीकार नहीं करता यदि वह कर्मों में व्यक्त नहीं होता है, और कर्मों को स्वीकार नहीं करता है यदि वे विश्वास के अनुरूप नहीं हैं।" (अत-तबरानी)

इस प्रकार इस्लाम की सादगी, तर्कसंगतता और व्यावहारिकता ही इस्लाम को एक अद्वितीय और सच्चे धर्म के रूप में दर्शाती है।

शरीर और आत्मा की एकता

इस्लाम की एक अनूठी विशेषता यह है कि यह जीवन को शरीर और आत्मा के निर्विवाद डिब्बों में विभाजित नहीं करता है। यह जीवन को नकारने के लिए नहीं बल्कि जीवन की पूर्ति के लिए है। इस्लाम तपस्या में विश्वास नहीं करता है। यह मनुष्य को भौतिक चीजों से दूर रहने के लिए नहीं कहता है। यह मानता है कि आध्यात्मिक उन्नति जीवन की कठिन और उथल-पुथल में पवित्रता से रहकर प्राप्त की जानी चाहिए, न कि संसार को त्यागकर। क़ुरआन हमें इस प्रकार प्रार्थना करने की सलाह देता है:

"हमारे प्रभु! हमें इस दुनिया में कुछ अच्छा और परलोक में भी कुछ अच्छा दो।" (क़ुरआन 2:201)

लेकिन जीवन की विलासिता का उपयोग करने में, इस्लाम मनुष्य को उदार होने और फिजूलखर्ची से दूर रहने की सलाह देता है, ईश्वर कहता है:

“...खाओ-पियो और बेजा ख़र्च न करो। वस्तुतः, वह बेजा ख़र्च करने वालों से प्रेम नहीं करता।” (क़ुरआन 7:31)

संयम के इस पहलू पर, पैगंबर ने कहा:

"उपवास का पालन करें और इसे (उचित समय पर) तोड़ें और प्रार्थना और भक्ति में (रात में) खड़े हों और सोएं, क्योंकि आपके शरीर का अधिकार आप पर है, और आपकी आंखों का आप पर अधिकार है, और आपकी पत्नी का दावा है तुम पर, और जो व्यक्ति आपसे मिलने आता है, वह आप पर दावा करता है।"

इस प्रकार, इस्लाम "भौतिक" और "नैतिक," "सांसारिक" और "आध्यात्मिक" जीवन के बीच किसी भी अलगाव को स्वीकार नहीं करता है, और मनुष्य को स्वस्थ नैतिक नींव पर जीवन के पुनर्निर्माण के लिए अपनी सारी ऊर्जा समर्पित करने के लिए कहता है। यह उसे सिखाता है कि नैतिक और भौतिक शक्तियों को एक साथ जोड़ दिया जाना चाहिए और आध्यात्मिक मोक्ष मनुष्य की भलाई के लिए भौतिक संसाधनों का उपयोग करके प्राप्त किया जा सकता है, न कि तपस्या का जीवन जीने या चुनौतियों से दूर भागकर।

दुनिया को कई अन्य धर्मों और विचारधाराओं के एकतरफापन का सामना करना पड़ा है। कुछ लोगों ने जीवन के आध्यात्मिक पक्ष पर जोर दिया है, लेकिन इसके भौतिक और सांसारिक पहलुओं की अनदेखी की है। उन्होंने दुनिया को एक भ्रम, एक धोखे और एक जाल के रूप में देखा है। दूसरी ओर, भौतिकवादी विचारधाराओं ने जीवन के आध्यात्मिक और नैतिक पक्ष को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया है और इसे काल्पनिक और आभासी बताकर खारिज कर दिया है। इन दोनों प्रवृत्तियों के

परिणामस्वरूप आपदा आई है, क्योंकि उन्होंने मानवजाति से शांति, संतोष और सुख छीन लिया है।

आज भी असंतुलन किसी न किसी रूप में प्रकट होता है। फ्रांसीसी वैज्ञानिक डॉ. डी ब्रोग्बी ने ठीक ही कहा है:

"बहुत तीव्र भौतिक सभ्यता में निहित खतरा उस सभ्यता के लिए ही है; यह असंतुलन है जिसके परिणामस्वरूप आध्यात्मिक जीवन का समानांतर विकास आवश्यक संतुलन प्रदान करने में विफल रहता है।"

ईसाई धर्म ने एक चरम पर गलती की है, जबकि आधुनिक पश्चिमी सभ्यता ने धर्मनिरपेक्ष, पूंजीवादी, लोकतंत्र और मार्क्सवादी समाजवाद के अपने दोनों रूपों में दूसरी तरफ गलती की है। लॉर्ड स्नेल के अनुसार:

"हमने एक बड़े अनुपात में बाहरी संरचना का निर्माण किया है, लेकिन हमने आंतरिक व्यवस्था की आवश्यक आवश्यकता की उपेक्षा की है; हमने कप के बाहर सावधानी से डिजाइन, सजाया और साफ किया है; लेकिन अंदर जबरन वसूली और अधिकता से भरा था; हमने अपने बढ़े हुए ज्ञान और शक्ति का उपयोग शरीर के आराम के लिए किया, लेकिन हमने आत्मा को दरिद्र छोड़ दिया। ”

इस्लाम जीवन के इन दो पहलुओं - भौतिक और आध्यात्मिक के बीच संतुलन स्थापित करना चाहता है। यह कहता है कि दुनिया में सब कुछ मनुष्य के लिए है, लेकिन मनुष्य को एक उच्च उद्देश्य की पूर्ति के लिए बनाया गया था: एक नैतिक और न्यायपूर्ण व्यवस्था की स्थापना जो ईश्वर की इच्छा को पूरा करेगी। इसकी शिक्षाएं मनुष्य की आध्यात्मिक और लौकिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। इस्लाम मनुष्य को अपनी आत्मा को शुद्ध करने और अपने दैनिक जीवन में सुधार करने का आदेश देता है - व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों - और शक्ति पर अधिकार और बुराई पर सदाचार की सर्वोच्चता स्थापित करने के लिए। इस प्रकार इस्लाम मध्यम मार्ग और एक न्यायपूर्ण समाज की सेवा में एक नैतिक व्यक्ति का निर्माण करने के लक्ष्य के लिए खड़ा है।

इस्लाम, जीवन जीने का एक पूर्ण तरीका

इस्लाम सामान्य और विकृत अर्थों में एक धर्म नहीं है, क्योंकि यह अपने दायरे को किसी के निजी जीवन तक सीमित नहीं रखता है। यह जीवन का एक संपूर्ण तरीका है और मानव अस्तित्व के हर क्षेत्र में मौजूद है। इस्लाम जीवन के सभी पहलुओं के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है - जैसे:- व्यक्तिगत और सामाजिक, भौतिक और नैतिक, आर्थिक और राजनीतिक, कानूनी और सांस्कृतिक,

और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय। क़ुरआन मनुष्य को बिना किसी आरक्षण के इस्लाम अपनाने और जीवन के सभी क्षेत्रों में ईश्वर के मार्गदर्शन का पालन करने का आदेश देता है।

वास्तव में, यह एक दुर्भाग्यपूर्ण दिन था जब धर्म का दायरा मनुष्य के निजी जीवन तक ही सीमित था और उसकी सामाजिक और सांस्कृतिक भूमिका शून्य हो गई थी, जैसा कि इस सदी में हुआ है। आधुनिक युग में धर्म के पतन का कारण निजी जीवन के क्षेत्र में उसके पीछे हटने से अधिक महत्वपूर्ण कोई अन्य कारक नहीं है। एक आधुनिक दार्शनिक के शब्दों में: "धर्म हमें ईश्वर की चीजों को सीज़र से अलग करने के लिए कहता है। दोनों के बीच इस तरह के न्यायिक अलगाव का अर्थ है धर्मनिरपेक्ष और पवित्र दोनों का अपमान ... उस धर्म का कोई मूल्य नहीं है यदि उसके अनुयायियों की अंतरात्मा को परेशान नहीं किया जाता है, जब हम सभी पर युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं और औद्योगिक संघर्ष सामाजिक शांति के लिए खतरा हैं। ईश्वर की चीजों को सीजर से अलग करके धर्म ने मनुष्य के सामाजिक विवेक और नैतिक संवेदनशीलता को कमजोर कर दिया है।"

इस्लाम धर्म की इस अवधारणा की पूरी तरह से निंदा करता है और स्पष्ट रूप से कहता है कि इसका उद्देश्य आत्मा की शुद्धि और समाज का सुधार और पुनर्निर्माण है। जैसा कि हम क़ुरआन में पढ़ते हैं:

"निःसंदेह, हमने भेजा है अपने दूतों को खुले प्रमाणों के साथ तथा उतारी है उनके साथ पुस्तक तथा तुला (न्याय का नियम), ताकि लोग स्थित रहें न्याय पर तथा हमने उतारा लोहा जिसमें बड़ा बल है तथा लोगों के लिए बहुत-से लाभ और ताकि ईश्वर जान ले कि कौन उसकी सहायता करता है तथा उसके दूतों की, बिना देखे। वस्तुतः, ईश्वर अति शक्तिशाली, प्रभावशाली है।" (क़ुरआन 57:25)

ईश्वर ये भी कहता है:

"शासन तो केवल ईश्वर का है, उसने आदेश दिया है कि उसके सिवा किसी की पूजा न करो। यही सीधा धर्म है, परन्तु अधिक्तर लोग नहीं जानते हैं।" (क़ुरआन 12:40)

इस प्रकार इस्लाम की शिक्षाओं का एक सरसरी अध्ययन भी दर्शाता है कि यह जीवन का एक सर्वांगीण तरीका है और मानव अस्तित्व के किसी भी क्षेत्र को बुराई की ताकतों के लिए खेल का मैदान बनने के लिए नहीं छोड़ता है।

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/hi/articles/643

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।